IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मारवाड़ में राठौड़ राज्य की स्थापना

मंजू वर्मा
सह आचार्य इतिहास
श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय
सीकर –332001

सारांशः– मारवाड़ में राठौड़ राज्य की स्थापना के पूर्व अर्थात तेरहवीं सदी के मध्य में मारवाड़ अनेक छोटे–छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभाजित था । चौहानों के अलावा पवार, परिहार, यादव, गुहिल, देवड़ा, सोनगिरा आदि अन्य राजपूत कुल भी मरुभूमि के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अपनी सत्ता स्थापित किए हुए थे । राजनीतिक दृष्टि से अस्त–व्यस्त एवं आंतरिक दृष्टि से विभाजित मारवाड़ ने जयचंद के वंशजों सीहा और सेतराय को यहां आकर अपना राज्य स्थापित करने का अवसर प्रदान कर दिया । सीहा ने अवसर पाकर पाली तथा आसपास के प्रदेशों पर अधिकार कर लिया । यहीं से मारवाड़ राज्य का बीजारोपण हुआ ।

सन 1949 ईस्वी में राजपूताना की रियासतो के राजस्थान राज्य में विलीनीकरण से पूर्व मारवाड़ (जोधपुर) का राज्य भारतीय मरुप्रदेश से अक्षांश 24°37´ से 27°42´ उत्तर तथा देशांतर 70°5´ से 75°22´ पूर्व के बीच फैला हुआ था यह समूचा क्षेत्र 'मरुस्थल' 'मरुकांतार' और 'मरु' के नाम से जाना जाता था।[1] मारवाड़ को 'मुरधर' देश भी कहा जाता है।[2] इस क्षेत्र की लंबाई 320 मील और चौड़ाई 170 मील है तथा इसका संपूर्ण क्षेत्रफल 36120 वर्गमील था।[3] इसके पूर्व में जयपुर और किशनगढ़ के भूतपूर्व राज्य, अग्नि कोण में अजमेर व मेवाड़, दक्षिण में सिरोही और पालनपुर, पश्चिम में कच्छ की खाड़ी और आधुनिक पाकिस्तान का सिंध प्रांत, वायव्य कोण में जैसलमेर तथा उत्तर में बीकानेर के भूतपूर्व राज्य स्थित थे।

मारवाड़ में राठौड़ राज्य की स्थापना के पूर्व अर्थात तेरहवीं सदी के मध्य में मारवाड़ अनेक छोटे–छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभाजित था। यद्यपि अजमेर, सांभर और चौहानों के कुछ अन्य क्षेत्र शीघ्रता से तुर्कों के अधिकार में चले गए थे परंतु नाडोल में चौहान आगामी शताब्दी तक अपना अधिकार बनाए रहे।[4] चौहानों की शक्ति का दूसरा प्रमुख केंद्र जालौर था। चौहानों के अलावा पवार, परिहार, यादव, गुहिल, देवड़ा, सोनगिरा आदि अन्य राजपूत कुल भी मरुभूमि के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अपनी सत्ता स्थापित किए हुए थे।[5] वे लोग सामान्यतः स्वतंत्र जीवन व्यतीत करते थे और आवश्यकता पड़ने पर अपने पड़ोस के किसी शक्तिशाली शासक की अधीनता भी स्वीकार कर लेते थे। उन लोगों को भी अपने अस्तित्व के लिए इस क्षेत्र की आदिवासी जातियों– मेर, भील, मीणा और जाटों से निरंतर संघर्ष करना पड़ता था। राजनैतिक दृष्टि से अस्त–व्यस्त एवं आंतरिक दृष्टि से विभाजित मारवाड़ ने जयचंद के वंशजों सीहा और सेतराय को यहां आकर अपना राज्य स्थापित करने का अवसर प्रदान कर दिया।

सन 1194 ईस्वी में मोहम्मद गौरी के आक्रमण से कन्नौज का राज्य क्षत–विक्षत हो गया। राजनैतिक भविष्य अंधकार में देखकर राव सीहा अपने भाग्य की परीक्षा हेतु पश्चिम की ओर मुड़ा परंतु तुर्कों की बढ़ती हुई शक्ति देखकर उसने तीर्थ यात्रा के लिए द्वारिका जाने का निश्चय किया। वहां से लौटते समय वह पाली पहुंचा। लुटेरों से आक्रांत वहां के समृद्ध ब्राह्मणों ने उस से सहायता मांगी । पहले तो सीहा ने उनकी सहायता की। फिर अवसर पाकर पाली तथा आसपास के प्रदेशों पर अधिकार कर लिया।[6] यहीं से मारवाड़ राज्य का बीजारोपण

हुआ। मुसलमानों से अपने राज्य की रक्षा के लिए युद्ध करते समय 9 अक्टूबर 1273 ईस्वी को उनकी मृत्यु हो गई थी।[7]

सीहा के पश्चात सन 1273 ईस्वी से सन 1383 ईस्वी तक उसके वंशजों आस्थान, धूहड़, रायपाल, कन्हपाल, जालणसी, हाड़ा, तीड़ा (टीड़ा), कान्हड़देव, त्रिभुवनसी, सुलखा, मल्लीनाथ और वीरम ने शासन किया। उनके शासनकाल में सीहा के राज्य में खेड़, ईडर, महेबा, (आधुनिक मालाणी) तथा भीनमाल के अतिरिक्त 140 गांव मिला लिए गए जिसके फलस्वरूप राज्य की सीमा काफी विस्तृत हो गई। [8]

सन 1383 ईस्वी में राव चूंडा (चामुंडराय) के राज्यारोहण से राज्य में एक नए युग का प्रारंभ हुआ। उसने मंडोर के दुर्ग पर अधिकार कर उसे अपनी राजधानी बनाया और नागौर, डीडवाना, सांभर, अजमेर तथा फलोदी पर अधिकार कर राज्य को विस्तृत और स्थाई बनाने की चेष्टा की।[9]

राव चूंडा के पश्चात उसके पुत्र कान्हा, सवा और रणमल राज्य के उत्तराधिकारी हुए। रणमल ने अपने राज्य में नाडोल, सोजत व जैतारण को भी मिला लिया।[10] उसके उत्तराधिकारी जोधा के शासनकाल में मेवाड़ के राणा ने मंडोर पर अधिकार कर लिया परंतु जोधा ने प्रयत्न कर मंडोर पर फिर से अपना अधिकार जमाया। फिर भी उसे इतना स्पष्ट हो गया कि मंडोर सुरक्षित नहीं है। इसलिए उसने वहां से 5 मील दक्षिण में स्थित चिड़ियाटूक नामक पहाड़ी पर 12 मई 1459 ईस्वी को एक नए दुर्ग की नींव रखी, दुर्ग के नीचे एक नगर बसाया और यही अपनी राजधानी स्थापित की। यह नगर उसके नाम पर जोधपुर के नाम से प्रख्यात हुआ और धीरे–धीरे उसके राज्य का नाम भी जोधपुर हो गया। जोधा ने जोधपुर, मेड़ता, पोकरण, सिवाना, शिव और भाद्राजून के प्रदेशों को जीतकर अपने राज्य को विस्तृत बनाया। [11]

सन्दर्भ सूची:–

1 .भृतहरि ने इस प्रदेश को 'मरुस्थल' कहां है । (नीतिशतक– श्लोक 49) । बाल्मीकि रामायण में 'मरूकांतार' शब्द का प्रयोग किया गया है । (युद्ध कांड – सर्ग 22) ।

2 'मरुधर' शब्द 'मरुधरा' का अपभ्रंश है जिसका अर्थ है मारवाड़ की भूमि ।

3. एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट, जोधपुर, 1945–46

4. कर्नल टॉड–एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 2 पृष्ट 9

5. (क) एर्सकाईन– राजपूताना गजेटियर्स, पृष्ट 64
(ख) वाल्टर–गजेटियर ऑफ़ मारवाड़ पृष्ट 8

6. (क) रेऊ–ग्लोरिज ऑफ़ मारवाड़ एंड द ग्लोरियस राठोड से, पृष्ट 10
(ख) कर्नल टॉड–एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान,भाग 2 पृष्ट 11

7. (क) रेऊ–मारवाड़ राज्य का इतिहास भाग 1, पृष्ट 31–41
(ख) ओझा–जोधपुर राज्य का इतिहास भाग 1, पृष्ट146 –158

8. राव आस्थान ने खेड़ का इलाका गुहिल राजपूतों से और राव रायपाल ने मालानी का क्षेत्र परमार राजपूतों से जीता था।

9. (क) नैनसी की ख्यात, भाग 2 पृष्ठ 312
(ख) बांकीदास की ख्यात, पृष्ठ 3–6

10. (क) बांकीदास की ख्यात, पृष्ठ 6–7
(ख) नैनसी की ख्यात, भाग 2, पृष्ठ 56–95

11 (क कर्नल टॉड–एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 2 पृष्ठ 15–17
(ख) रेऊ–मारवाड़ राज्य का इतिहास, भाग 1 पृष्ठ 91–103
(ग) ओझा–जोधपुर राज्य का इतिहास भाग 1, पृष्ट 225 से 259